तलपट
(TRIAL BALANCE)

डॉ बच्चा कुमार रजक
भारती मंडन कालेज रहिका मधुबनी

"दोहरा लेखा प्रणाली के अन्तर्गत खाताबही में डेबिट की राशियों का योग क्रेडिट की सभी राशियों के योग के बराबर अवश्य होना चाहिए और यह ज्ञात करने के लिए कि ऐसा है या नहीं, तलपट एक मानी हुई विधि है। तलपट, खाताबही का संक्षिप्त संग्रह होने के कारण, माल खाता, लाभ-हानि खाता और चिट्ठा बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।" **कार्टर**

खातों का समतुलन करना

(BALANCING OF ACCOUNTS) समतुलन का आशय बाकी निकालकर खाता बन्द करना है। यों तो खाते कभी भी समतुलन किये जा सकते हैं क्योंकि व्यवसाय के स्वामी को कभी भी सूचना प्राप्त करना आवश्यक हो सकता है (और इसलिए व्यवहार में इस प्रकार की खाता-बहियां प्रयोग की जाती हैं, जिनमें प्रति दिन समतुलन करने की व्यवस्था हो) फिर भी समतुलन का कार्य प्रायः वित्तीय वर्ष के अन्त में होता है। समतुलन केवल वैयक्तिक और कुछ सम्पत्ति एवं दायित्व के खातों का होता है। शेष खाते जैसे खरीद खाता, बिक्री खाता एवं सभी आय व्यय खाते जैसे किराया खाता एवं मजदूरी खाता, आदि व्यापारिक व लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरण द्वारा बन्द कर दिये जाते हैं। हां, तलपट बनाने हेतु सभी खातों का समतुलन किया जा सकता है।

तलपट या परीक्षा सूची का आशय

(MEANING OF TRIAL BALANCE) तलपट या परीक्षा सूची खाताबही का सूक्ष्म है। इसकी परिभाषा के सम्बन्ध में कुछ मत निम्न हैं :

(1) कार्टर-तलपट उन डेबिट व क्रेडिट बाकियों की एक अनुसूची या सूची है जो खाताबही के खातों से निकाली जाती है और इसमें रोकड़ पुस्तक की रोकड़ व बैंक की वाकियां भी शामिल की जाती हैं।

(2) बी. जी. बिकरी—प्रत्येक सौदे के दोनों रूपों को लिखना होता है। एक रूप को डेबिट व दूसरे को क्रेडिट किया जाता है। यदि एक विवरण-पत्र बनाया जाय जिसे 'तलपट' कहा जाता है तथा

जिसमें खाताबही में किये गये लेखों के डेबिट व क्रेडिट के योगों को लिखा जाय तो इसके डेबिट व क्रेडिट दोनों खानों का योग बराबर होगा।

(3) पिकिल्स—द्वितीय वर्ष (या अन्य किसी तिथि पर) के अन्त में खाताबही में खुले हुए खातों की बाकियां निकाली जाती हैं और एक अनुसूची (Schedule) जर्नल के नमूने की यह जांच करने के लिए बनायी जाती है कि वास्तव में डेबिट का योग क्रेडिट के योग के बराबर है। इस प्रकार की अनुसूची को 'तलपट' कहा जाता है।

(4) रोलैण्ड–बाकियों की अन्तिम सूची, जुड़ी हुई और मिली हुई 'तलपट' कही जाती है।

(5) स्पाइसर एण्ड पेगलर—यदि एक निश्चित तिथि पर सब पोस्टिंग्स पूरी हो जाती हैं (अर्थात् प्रत्येक सौदे का दोहरा लेखा हो जाता है), तो बाकियों की सूची बनायी जा सकती है। इस सूची को 'तलपट' कहा जाता है।

तलपट की आदर्श परिभाषा-उपर्युक्त विवरण तथा विभिन्न विद्वानों की विचारधाराओं के अध्ययन के पश्चात् तलपट की उचित परिभाषा अग्र प्रकार की जा सकती है :

दोहरा लेखा प्रणाली के नियमों के अनुसार सम्पूर्ण सौदों से सम्बन्धित खातों को खाताबही में खोलने एवं उनके डेबिट व क्रेडिट पक्ष के योग व बाकियां (Totals and Balances) निकालने के बाद प्रमुख रूप में उनकी अंकगणित सम्बन्धी शुद्धता ज्ञात करने के लिए एक विशेष प्रकार का विवरण-पत्र एक निश्चित समय (जो साधारणतः वित्तीय वर्ष का अन्तिम दिन होता है) पर बनाया जाता है जिसे 'तलपट' कहा जाता है। इसी के आधार पर व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाया जाता है।

तलपट

उपर्युक्त परिभाषा को भली-भांति समझने के लिए इस निम्नांकित अंगों में बांटा गया है :

(1) दोहरा लेखा प्रणाली के आधार पर खाते खोलना-जब तक खातावही में सम्पूर्ण सौदों से सम्बन्धित खाते दोहरा लेखा प्रणाली के आधार पर नहीं खोले जायेंगे तब तक कोई भी सूची उनकी शुद्धता ज्ञात करने के लिए यदि बनायी जायेगी तो वह सही फल नहीं प्रकट करेगी।

(2) योग एवं बाकी निकालना-खातावही में खुले हुए सम्पूर्ण खातों के डेबिट व क्रेडिट पक्षों का योग निकाला जाता है और बाकियां निकाली जाती हैं। जब खातों के जोड़ एवं बाकियां निकाल ली जाती हैं तभी तलपट वनाया जाता है।

(3) विवरण-पत्र—तलपट एक विशेष प्रकार का विवरण-पत्र होता है। इसका ज्ञान इसके नमूने को देखकर किया जा सकता है, जो कि आगे दिया हुआहै।

(4) एक निश्चित समय–तलपट एक निश्चित समय पर बनाया जाता है। यह अधिकतर वर्ष के अन्त में बनाया जाता है, परन्तु इसे किसी भी समय आवश्यकतानुसार बनाया जा सकता है; जैसे छमाही, तिमाही या मासिक, आदि।

तलपट बनाने के उद्देश्य

(OBJECTS OF MAKING TRIAL BALANCE)

(1) लेजर के किसी भी खाते की वाकी का ज्ञान सरलता से किया जा सकता है। (2) यह इस तथ्य का भी प्रमाण है कि प्रत्येक सौदे का दोहरा लेखा प्रणाली द्वारा लेखा पूरा कर लिया गया है। (3) तलपट बनाने का उद्देश्य खाताबही में खोले गये खातों की शुद्धता और विशेष तौर पर अंकगणित सम्बन्धी शुद्धता का ज्ञान करना होता है। दोहरा लेखा प्रणाली के अनुसार प्रत्येक डेबिट के लिए एक क्रेडिट होता है अतः सारे डेविट का योग सारे क्रेडिट के योग के बरावर अवश्य होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हो तो कोई अशुद्धि हो गयी है, यद्यपि डेबिट व क्रेडिट के योगों के मिलने पर भी अशुद्धियां रह सकती हैं। (4) तलपट बनाने का उद्देश्य यह भी है कि इसकी सहायता से व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा सरलता से बनाये जा सकते हैं जो व्यापार का लाभ या हानि तथा वित्तीय स्थिति प्रकट करते हैं। (5) गत वर्ष के तलपट की राशियों की तुलना कर महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

तलपट की विषय-सामग्री

(SUBJECT-MATTER OF TRIAL BALANCE) (1) शीर्षक (Heading) तलपट के ऊपर शीर्षक डालते समय उस तारीख का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए जिस तारीख को खाते बन्द किये गये हैं। (2) खाने (Columns)–(i) तलपट में प्रथम खाना खाताबही में खोले

हुए ऐसे खातों के शीर्षक को लिखने के लिए बनाया जाता है जिनकी बाकियां एवं योग या दोनों इसमें लिखे जाते हैं। (ii) तलपट में दूसरा खाना खातावही की पृष्ठ संख्या (Ledger Folio or L.F.) का होता है। इस खाने में खाताबही की वह पृष्ठ संख्या लिखी जाती है जिस पर सम्वन्धित खाता खुला हुआ होता है। (iii) तलपट में तीसरे और चौथे खाने राशियों के लिए होते हैं। (3) योग-जब खाताबही में खुले हुए सभी खातों के योग या बाकियां या दोनों आवश्यकतानुसार लिख दिये जाते हैं, तो फिर तलपट में भी योग लगाया जाता है। यह योग की क्रिया बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि योग बराबर होने पर अंकगणित सम्बन्धी शुद्धता का ज्ञान प्राप्त होता है। तलपट बनाने की विधियां (1) योग विधि (Total Method) इस विधि में प्रथम खाना 'खातों का शीर्षक', दूसरा खाना 'खाताबही की पृष्ठ संख्या' के लिए, तीसरा खाना 'डेबिट के योग' के लिए और चौथा खाना 'क्रेडिट के योग' के लिए होता है।

(2) अन्तर विधि (Balance Method)—इस विधि में प्रथम दो खाने योग विधि की तरह ही होते हैं, परन्तु तृतीय खाने में 'डेबिट की बाकियां' और चतुर्थ खाने में 'क्रेडिट की बाकियां' लिखी जाती हैं।

(3) योग और अन्तर विधि (Total and Balance Method)—इस विधि में प्रथम दो खाने तो योग विधि की तरह ही होते परन्तु राशियों के लिए चार खाने बनाये जाते हैं। प्रथम खाना डेबिट योग के लिए, द्वितीय खाना क्रेडिट योग के लिए, तृतीय खाना डेविट वाकी के लिए और चतुर्थ खाना क्रेडिट बाकी के लिए होता है।

(4) बराबर योग वाले खातों के योग न लिखकर तलपट बनाने की विधि (Omitting Accounts of Equal Totals Method)—इस विधि में खाते उसी प्रकार बनाये जाते हैं; जैसे योग विधि में बनाये जाते हैं, परन्तु उन खातों का कोई विवरण नहीं दिया जाता है जिनके डेबिट व क्रेडिट के योग बराबर होते हैं क्योंकि इनका तलपट में मिलने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।